आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

वर्ष–6 अंक–4 जुलाई–2012

शोध प्रपत्र

कालिदास की रचनायें विदुषी विद्योत्तमा कृत हैं** -डॉ. विभा रानी दुबे 1-7
सांख्य दर्शन के आलोक में दु:खत्रयाभिघातजन्य जिज्ञासा का स्वरुप -डॉ. श्रुति दुबे 8-14

महाभारत का युद्ध क्यों हुआ ? -डॉ. राजीव त्रिपाठी 15-20
मनुस्मृति से मनु के स्त्री विषयक आख्यान (अध्याय 4 से 5 के प्रसंग)-डॉ. मनीषा शुक्ला 21-24

महाभारत में अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग -डॉ. राजीव कुमार त्रिपाठी 25-29
श्री कृष्णपन्तस्याभिनन्दनं विश्वनाथ पुस्तकालयस्य (काशी) -डॉ. महेन्द्र शुक्ल 30-32

अकेलेपन से जूझते बुजुर्गों की दास्तां बयान करती हिंदी कविता -डॉ. राधा वर्मा 33-37
समकालीन हिंदी कविता में सांप्रदायिकता की विचारधारा के प्रतिरोधी स्वर -विनय कुमार पटेल 38-40

महेन्द्र भटनागर के गीतों में बिम्ब-योजना -डॉ. आशा वर्मा 41-44
भूमण्डलीकरण र समसामयिक भारतीय नेपाली कविता -योगेश पन्थ 45-49

मध्यकालीन कवि तुकाराम की दृष्टि में नारी : एक विमर्श -डॉ. अंशुमाला मिश्रा 50-56
डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक राजनैतिक आन्दोलन -डॉ. प्रेम चन्द्र यादव 57-60

संसद बनाम् सिविल सोसायटी : भारत के विशेष संदर्भ में -डॉ. रामनिवास पटेल 61-71
अनाथ एवं अंगीकृत बच्चों की व्यक्तित्व विशिष्टताओं का अध्ययन -मनीष कुमार चौहान एवं डॉ. विरेन्द्र सिंह यादव 72-75

पूर्व प्राथमिक शिक्षा का प्रभाव एवं समस्यायें -डॉ. चक्रलाल वर्मा 76-79
प्राथमिक विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन एवं नि:शुल्क पुस्तकों के वितरण कार्यक्रम का विद्यार्थियों के नामांकन, बौद्धिक विकास एवं अध्ययन आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन -अमरेश कुमार एवं डॉ. विरेन्द्र सिंह यादव 80-84

स्त्री शिक्षा का विकास एवं समस्यायें -डॉ. चक्रलाल वर्मा 85-87
भारत छोड़ो आन्दोलन एवं गोलमेज सम्मेलन का इतिहास -उमाशंकर राम 88-90

बिहार के साहित्यिक रत्न : जानकी बल्लभ शास्त्री -डॉ. नीलू कुमारी 91-94
घटना क्रम : स्वतंत्र-भारत का वर्तमान तक ऐतिहासिक आँकलन -उमाशंकर राम 95-97

खादी उद्योग के क्षेत्र में बुनकरों के योगदान एवं उनकी समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन (मगहर ग्राम के विशेष संदर्भ में)
-दीपशिखा पाण्डेय एवं सरिता यादव 98-101
जीवन मूल्यों में परिवर्तन के फलस्वरुप लैंगिक अनुपात में असंतुलन -डॉ. अनीता सिंह एवं शशि सिंह 102-108

संगीत द्वारा स्वस्थ जीवन हेतु आन्तरिक यात्रा नियंत्रण -डॉ. विभा चतुर्वेदी 109-110

जैन साहित्य में रामकाव्य परम्परा -डॉ. साधना सिंह 111-113

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

आवश्यक सूचना

अध्यापक एवं शोध छात्र-छात्रायें निम्न में से किसी भी प्रकार की पुस्तक प्रकाशन के लिए एम.पी.ए.एस.वी.ओ. अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन (पत्रावली संख्या V-34654,रजि0 533 / 2007-2008) में शीघ्र सम्पर्क करें-

1. पाठ्य पुस्तक
2. नाटक
3. कहानी
4. उपन्यास
5. कविता
6. प्रतियोगी परीक्षा सामग्री
7. प्रोजेक्ट
8. एम. फिल. प्रबन्ध
9. शोध प्रबन्ध
10. निबन्ध
11. सेमिनार प्रोसीडिंग
12. सम्पादित पुस्तक

उपर्युक्त पुस्तकें आई.एस.बी.एन. के सहित उत्तम गुणवत्ता के साथ शीघ्र प्रकाशित की जायेंगी। पुस्तक प्रकाशन की भाषा हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत कुछ भी हो सकती है।

सम्पर्क करें-

एम.पी.ए.एस.वी.ओ. अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन : 9935784387,0542-2310539

समय : 3-5 दिन

कार्यालय :

गोपाल कुञ्ज,फ्लैट नं.-1,नरिया ,लंका ,वाराणसी 221005

www.anvikshikijournal.com/book

पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777

भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2012) 6,8-14
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 30 मई 2012

जैन साहित्य में रामकाव्य परम्परा

डॉ0 साधना सिंह*

लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित जैन साहित्य में रामकाव्य परम्परा में शोध प्रपत्र की लेखिका मैं डॉ0 साधना सिंह घोषणा करती हूँ कि लेखिका के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेती हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख/शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देती हूँ। मैं शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देती हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देती हूँ।

जैन पुराण ने 63 महापुरुष को मान्यता दी है जिसमें 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 बासुदेव और 9 प्रतिवासुदेव माने गये हैं। इनमें राम को आठवें बलदेव, लक्ष्मण को आठवें वासुदेव और रावण को आठवाँ प्रतिवासुदेव माना गया है। इसीलिए जैन पुराण में राम के स्थान पर वासुदेव लक्ष्मण, प्रतिवासुदेव रावण का वध करते हैं। जैन-परम्परा में ब्राह्मण-परम्परा से अनेक बातें अलग हैं जिनका मुख्य कारण धार्मिक दृष्टिकोण है। यहाँ राम-लक्ष्मण को पूर्वजन्म में कमजोर व दुर्बलताओं से युक्त सामान्य पुरुष रूप में दर्शाया गया है। जैन साहित्य में रामकथा का दो रूप मिलता है एक विमलसूरी की रामकथा जो यह वाल्मीकि रामायण के ज्यादा नजदीक है। दूसरी गुणभद्र की रामकथा जो ब्राह्मण विरोधी है। प्राकृत व अपभ्रंश में उल्लिखित इन रचनाओं का क्रमवार वर्णन इस प्रकार है–

पउम चरियम्– विमलसूरी कृत यह रचना वीर संवत् 530 या विक्रमी संवत् 60 में रचित हुई। इसमें 118 उद्देश्य या पर्व है जिसे संस्कृत में सर्ग कहते हैं। विमलसूरी ने राम के लिए 'पउम' शब्द का प्रयोग किया है, क्योंकि जैन साहित्य में 'बलदेव' के लिए 'राम' शब्द का प्रयोग हुआ है अतएव इसका नाम 'पउम् चरियम्' पड़ा।

'पउम् चरियम्' व वाल्मीकि रामायण की कथा में कोई विशेष अन्तर नहीं है। इसमें भी विद्याधर काण्ड, राम-सीता का जन्म तथा विवाह, वन भ्रमण, सीता हरण और खोज, युद्ध, उत्तर रामचरित के आधार पर विस्तृत वर्णन है। 'रविषेण' द्वारा इसका पूरा अनुवाद किया गया है। दोनों के कथानक में कोई अन्तर नहीं है। इसकी कथा प्रारम्भ के सन्दर्भ में कहा गया है कि राजा श्रेविण (सेविग) महावीर के प्रमुख शिष्य गौतम से रामकथा जानना चाहता है और गौतम (गोयम) रामकथा सुनाते हैं।

रावणवह अथवा सेतुबन्ध– रामकथा सम्बन्धी प्राकृत का यह प्रमुख महाकाव्य है। इसकी भाषा महाराष्ट्री प्राकृत है। इसे प्रवरसेन द्वारा लगभग छठी शताब्दी ई. के उत्तरार्ध में रचित माना जाता है। वाल्मीकि कृत युद्ध काण्ड तक की कथा इसमें मिलती है। प्रथम उच्छवास में राम का विरह वर्णन मार्मिक है। वीर व शृंगार रसों के सुन्दर चित्रण के साथ समुद्र बन्धन तथा मछलियों द्वारा सेतु नष्ट की कथा इसमें मिलती है।

वासुदेव हिण्डी– दो खण्डों में विभक्त इस रचना के प्रथम खण्ड के रचनाकार संघदास गणिवाचक और द्वितीय खण्ड के रचयिता धर्मसेन गणी महतार हैं। प्रथम की भाषा जैन प्राकृत है दूसरे की मागधी शौरसेनी, दोनों खण्ड क्रमशः छठीं-सातवीं शताब्दी की रचना है। प्रथम खण्ड के 5-7 पृष्ठों में रामकथा संक्षिप्त रूप में मिलती है।

* अंशकालिक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी

© लेखक 2012, एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित, सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com & ijraeditor@yahoo.in, इस प्रपत्र को www.anvikshikijournal.com पर पढ़ें

इसके अतिरिक्त शीलाचार्य की ''चउपण्ण महापुरिष चरियम्'' के अन्तर्गत ''राम लक्खन चरियम'' (नवीं शताब्दी ई.) प्राप्त होती है जो वाल्मीकि रामायण से ज्यादा प्रभावित नजर आती है तथा 11वीं शताब्दी ई. के आसपास 'भद्रेश्वर सूरि' द्वारा रचित 'कहाबली' नामक ग्रन्थ मिलता है। इसके अन्तर्गत 23 हजार छंदों में रामायण की कथा प्राप्त होती है। भुवनतुंग सूरि कृत 'सिया-चरियम्' तथा 'राम-लखन-चरियम्' एवं संवत् 1241 में ''कुमार-पाल-प्रतिबोध'' नामक एक गद्य-प्राकृत-काव्य में भी रामकथा का उल्लेख मिलता है जिसके रचयिता 'सोमप्रभ सूरि' है जो एक जैन पंडित थे, यह ग्रन्थ अधिकांश प्राकृत में ही है। बीच-बीच में संस्कृत श्लोक और अपभ्रंश के दोहे आए हैं। अपभ्रंश के पद्यो में कुछ तो प्राचीन है और कुछ सोमप्रभ और सिद्धिपाल कवि के बनाए हैं।[1]

इन प्राकृत रचनाओं के अतिरिक्त जैनाचार्यों द्वारा रचित अपभ्रंश की रचनाएँ निम्नवत् है–

स्वयंभू कृत पउम चरिउ– स्वयंभू कृत 'पउम चरिउ' रामकाव्य सम्बन्धी एक प्रमुख रचना है। स्वयंभू कोशल के निवासी थे जिन्हें भारत पर आक्रमण के समय राष्ट्रकूट राजा 'ध्रुव' (वि.सं. 837-851) का मंत्री रपडा धनंजय मान्यखेट ले गया था।[2] 'पउम चरिउ' के सम्बन्ध में 'राहुल सांकृत्यायन' ने उच्छवासित भाव से घोषित किया है कि 'स्वयंभू' का रामायण हिन्दी का सबसे पुराना उत्तम काव्य है।[3] यह तर्कसंगत नहीं प्रतीत होती, किन्तु इतना स्पष्ट है कि रामकथा सम्बन्धी अपभ्रंश की यह प्रथम रचना है। 'पउम-चरिउ' 90 सन्धियों में विभाजित है। स्वयंभू स्वयं इसे पूरा नहीं कर पाये अपितु शेष अंश को उनके पुत्र त्रिभुवन स्वयंभू (तिहुअण स्वयंभू) ने पूरा किया था। संपूर्ण कथा पाँच काण्डों में विभक्त है, विद्याधर काण्ड, अयोध्या काण्ड, सुन्दर काण्ड, युद्ध काण्ड और उत्तर काण्ड।

पउम चरिउ की कथा का प्रारम्भ अयोध्या काण्ड से होता है क्योंकि विद्याधर काण्ड में अषभ जिन्न का जन्म तथा उनका चरित्र, भरत बाहुबलि वर्णन, राक्षस व वानर वंश उत्पत्ति का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है, रावण के दशानन होने का तर्कयुक्त कारण दिया है कि बचपन में रावण खेलते-खेलते एक भंडार में पहुँच गया, वहाँ से उसे एक हार मिला जिसमें नौ मणियाँ जुड़ी हुई थी, रावण ने उस हार को पहन लिया जिसके कारण प्रत्येक मणि में उसका मुख दिखने लगा तभी से उसका नाम दशानन या दशमुख वाला पड़ा। अठारहवीं-उन्नीसवीं सन्धि में अंजना पवनजय से हनुमान के जन्म तथा उनके चरित्र का वर्णन है। हनुमान को रावण का सहायक माना गया है जो वरुण के साथ युद्ध में रावण का साथ देते हैं और अत्यन्त वीरता का प्रदर्शन करते हैं। अतः रावण लंका के हनुमान का सत्कार करता है। अयोध्या कांड का आरम्भ कैकेयी वरदान, दशरथ पुत्रों का जन्म जनक पुत्री सीता का जन्म आदि प्रसंग आया है। तदुपरांत स्वयंवर में धनुर्भंग पश्चात् राम व सीता का विवाह, विवाहोपरांत ज्योतिषियों की यह भविष्यवाणी कि इस कन्या (सीता) के कारण अनेक राक्षसों का विनाश होगा (सर्ग 23-23) आदि प्रसंग उधृत है– बाद में दशरथ का विरक्ति स्वरूप राम का राज्याभिषेक करना, कैकेयी का वरदान स्वरूप राम का वनवास माँगना, राम के साथ लक्ष्मण व सीता का वन जाना तदुपरांत अयोध्या का श्रीहीन होने का प्रसंग आता है। आगे वे यात्रा करते-करते परिमाल देश पहुँचते हैं व गंभीरा नामक नदी की चर्चा भी मिलती है जहाँ से राम समस्त अयोध्यावासियों को वापस भेज देते हैं, बाद में भरत सभी को मनाने जाते हैं न मानने पर राज-पाट स्वीकार करते हैं और धवन मुनि के आश्रम में आकर प्रतिज्ञा लेते हैं कि राम के वापस आने पर वे राज्य से निवृत्त हो जायेंगे। तत्पश्चात् लक्ष्मण का सूर्याहास व खड्ग प्राप्त करना, चन्द्रनखा पुत्र शम्बूक का वध, चन्द्रनखा की कामाशक्ति एवं उसका विरूपीकरण, रावण का सीता पर आसक्त होना तथा अवलोकनी विधा द्वारा सीता हरण रावण का जटायु व विद्याधर को पराजित करना, राम का जटायु आदि से मिलना तथा सीता को वन में ढूँढ़ने का वर्णन, बालि, सुग्रीव वध, हनुमान का सीता खोज में राम का सहयोग देना और अंत में लंका दहन की कथा मिलती है। कवि ने लक्ष्मण मूर्छा का कारुणिक वर्णन किया है।

पउम चरिउ में राम के मानवीरूप का वर्णन किया है एक तरफ जहाँ वे शक्तिसम्पन्न मानव है, वहीं मानव शुलभ दुर्बलता की उनमें मिलती है। सीता को स्वीकार करते समय वे स्वयं शंकित हृदय सीता के सच्चरित्र पर संदेह व्यक्त करते हैं। सीता की अग्नि शुद्धि का वर्णन अधिक प्रबलता से प्राप्त होता है। 83वीं सन्धि में सीता सगर्व नारी रूप में सामने आती है क्योंकि वे राम पर व्यंग्य करती है और अग्नि में तपकर सोना सिद्ध होती है वह अपने सतीत्व की पताका सारे संसार में फहराती हैं। स्वयंभू ने करुण व श्रृंगार दोनों रसों का सुन्दर प्रयोग किया है।

पुष्पदंत कृत पउम चरिउ या महापुराण– पुष्पदंत के महापुराण को जैन उसी प्रकार देखते हैं जिस तरह से धर्मानुयायी महाभारत को, यह 120 सन्धियों में विभक्त है तथा आदि पुराण व उत्तर-पुराण दो खण्डों में विभक्त है। पुष्पदंत ने रामकथा आत्मनिवेदन से प्रारम्भ किया है वे कहते हैं कि 'मेरे पास रामचरित रचना के लिए सामग्री नहीं है और मेरे पूर्व महाआचार्य स्वयंभू आदि महाकवियों ने रामकथा सम्बन्धी अपनी रचनाएँ की हैं।'

महापुराण के 37 संधियों में आदि तीर्थंकर ऋषभ देव की कथा है। प्रारम्भ की दो संधियों में आत्मनिवेदन, विनय प्रदर्शन, आश्रयदाता की प्रशस्ति, दुर्जन निंदा, सज्जन प्रशंसा आदि के वर्णनोपरांत काव्य प्रारम्भ होता है जिसमें ऋषभ जन्म, विवाह, पुत्रोत्पत्ति के उपरान्त उनके सन्यास का वर्णन है। दूसरी तरफ उनके पुत्र भरत व बाहुबलि में युद्ध होता है। हारकर बाहुबलि राज्य छोड़ देता है और जैन धर्म स्वीकार करता है। ऋषभ के महानिर्वाण के वर्णन के बाद आदि पुराण का खण्ड समाप्त होता है।

इसमें 69 से लेकर 79 तक की संधि में रामकथा उधृत है। कथा का आरम्भ रामकथा सम्बन्धी शंका से होती है। राजा श्रेविक गौतम से कहते हैं– रामकथा सम्बन्धी मेरे मन में शंका है जैसे– रावण के दशमुख कैसे थे, रावण राक्षस कैसे था, कुम्भकर्ण दस माह कैसे सोता था, राम ने रावण को बाणों से कैसे मारा आदि अतएव इन प्रश्नों के समाधान के लिए गौतम ने रामकथा सुनाई। इन्होंने कुछ नवीन प्रसंगों को लिया है जो पूर्ववर्ती रचनाओं में नहीं मिलती। स्वयंभू कृत रामकथा से भी यह भिन्न है जैसे स्वयंभू की कथा में राम की माता का नाम अपराजिता है। इसमें राम की माता का नाम सुबला दिया गया है। लक्ष्मण को कैकेयी पुत्र, लक्ष्मण को ही श्यामवर्ण व राम को पद्म वर्ण का माना गया है। यहाँ सीता रावण व मन्दोदरी की पुत्री है जिसे अनिष्ट की आशंका से रावण वन में छोड़ देते हैं और जनक उठाकर उसका लालन-पालन करते हैं। राम का आठ विवाह व नारद के उकसावे पर रावण द्वारा सीता हरण भी नवीन है। विवाहोपरांत राम-सीता का वाराणसी आना तथा रनिवास की उद्यान क्रीड़ा का कवि ने बड़े मनोयोग से वर्णन किया है। इसमें सीता की अग्निपरीक्षा का वर्णन नहीं मिलता। राम की वापसी पश्चात् दशरथ की मृत्यु भी नवीन है।

रइधू-पद्म पुराण–

विक्रम की 15वीं शता. के लगभग जैन कवि रइधू की रचना 'पद्म पुराण' मिलती है इसमें 265 कड़वकों तथा 12 संधियों में राम कथा मिलती है जिसके अन्तर्गत रावण का दिग्विजय, राम जन्म, सीता विवाह, दशरथ मरण, भरत को राज्य, राम वनगमन, सीता की अग्नि परीक्षा तथा स्वर्गारोहण, रावण युद्ध आदि प्रसंग को लिया गया है।

सारांशतः जैन साहित्यकारों ने अपने भावपूर्ण वर्णनों तथा ब्राह्मण परम्परा के राम के आदर्श स्वरूप को स्थापित रखते हुए राम व राम कथा सम्बन्धी अन्य पात्रों के मानवीय दुर्बलताओं को भी उजागर किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास- रामचन्द्र शुक्ल, पृ0 16 (बाइसवाँ संस्करण)।
2. हिन्दी साहित्य का वृ0 इतिहास-पृ0 248 (प्रथम खण्ड), (संपादक-राजबली पाण्डेय)
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल- हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ0 65।